श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सतना म.प्र. में आचार्यश्री समयसागरजी महाराज एवं निर्यापक मुनिश्री अभयसागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी दिनांक 11 से 12 जनवरी 2025

महाकवि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा विरचित महाकाव्य मूकमाटी का संस्कृत अनुवाद मूकमृत्तिका के आधार पर

मूकमृत्तिका में सूक्तियाँ

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

(राष्ट्रपति सम्मानित)

संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद्

---

1. प्रस्तावना –

2. परिचय –

- मूकमाटी ग्रंथ का संक्षिप्त परिचय –
- ग्रंथकार की पृष्ठभूमि और साहित्यिक योगदान –
- ग्रंथ की साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता –

3. सूक्तियों का स्वरूप –

- सूक्ति शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ –
- सूक्तियों की परिभाषा और महत्व –
- मूकमाटी में प्रयुक्त सूक्तियों की शैली –

4. दर्शन और विचारधारा –

1. सूक्तियों में निहित सामाजिक, नैतिक, और दार्शनिक दृष्टिकोण –
2. भारतीय परंपरा और विचारधारा का प्रभाव –

5. संदेश और शिक्षा –

1. सूक्तियों के माध्यम से प्रसारित प्रमुख संदेश
2. जीवन-प्रबंधन और समाज सुधार में सूक्तियों की भूमिका

6. साहित्यिक विश्लेषण –

1. मूकमाटी की सूक्तियों का अन्य ग्रंथों की सूक्तियों से तुलना
2. साहित्यिक दृष्टिकोण से सूक्तियों का योगदान

7. समकालीन संदर्भ –

1. मूकमाटी की सूक्तियों की प्रासंगिकता और प्रभाव

2. आधुनिक जीवन में सूक्तियों का उपयोग

8. भाषायी विशिष्टता –

1. मूकमाटी की भाषा, शैली और सूक्तियों में प्रयुक्त प्रतीकों का विश्लेषण
2. क्षेत्रीय बोली और भाषा एवं प्राच्य भाषाओं का प्रभाव

9. सूक्तियों की विविधता –

1. विभिन्न प्रकार की सूक्तियाँ: नैतिक, धार्मिक, व्यावहारिक, और दार्शनिक –
2. सूक्तियों के संदर्भ और उद्देश्य –

10. सूक्तियों में प्रकृति और मानव संबंध

1. सूक्तियों में प्रकृति के प्रतीकों का प्रयोग
2. मानव जीवन और प्रकृति के बीच सामंजस्य का संदेश

11. कलात्मक सौंदर्यशास्त्र –

1. मूकमाटी की सूक्तियों में काव्यात्मक सौंदर्य –
2. अलंकार, छंद, और भाषायी प्रवाह का योगदान –

12. लोकप्रियता और प्रभाव –

1. मूकमाटी की सूक्तियों का समाज पर प्रभाव –
2. साहित्य, शिक्षा और जनजीवन में इनका योगदान –

13. अनुवाद और प्रचार-प्रसार –

1. मूकमाटी की सूक्तियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद –
2. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्रंथ की पहचान –

14. चिंतन के आधुनिक आयाम –

1. आधुनिक समस्याओं पर मूकमाटी की सूक्तियों की प्रासंगिकता –
2. इन सूक्तियों के माध्यम से सामाजिक और नैतिक पुनर्निर्माण –

15. शोध की चुनौतियाँ –

1. मूकमाटी ग्रंथ से सूक्तियों को चुनने और उनका विश्लेषण करने में आने वाली कठिनाइयाँ –
2. इन कठिनाइयों का समाधान –

16. निष्कर्ष

1. शोध के प्रमुख निष्कर्ष
2. ग्रंथ की सूक्तियों का व्यापक प्रभाव और भविष्य की संभावनाएँ

17. संदर्भ सूची

1. प्रस्तावना – कार्य-कारण की व्यवस्था सृष्टि संचालन और जीवन संचालन में अत्यंत उपादेय है। इसके बिना हम वस्तु-तत्व को नहीं जान सकते हैं। पहले भूख लगी या भोजन सामग्री पहले बनी। भूख लगी इसलिए भोजन सामग्री बनी है, या भोजन सामग्री प्रकृति से प्राप्त हैं सो भूख लगी है। यह कार्य कारण व्यवस्था है। दोनों का संयुक्त योगदान है। भूख है तो भोजन है और भोजन है तो भूखशमन भी है। कवियों ने मुक्त हृदय से, बंधनरहित होकर और आत्मानंद के लिए काव्यों का सृजन किया। काव्यों के सृजन के पश्चात् उसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पूकाव्य आदि में रखा गया, उनकी परिभाषाएं तय की गई। इनकी परिभाषाओं के आधार पर काव्यों का सृजन नहीं हुआ होगा। अब हो रहा है वह पृथक् बात है। आज भी काव्य की अपनी विधा है, ऐसा काव्य जो मानव जीवन को उन्नयन, शांति, सुख, समृद्धि और आनंद का विषय हो, वह निश्चित ही उत्कृष्ट काव्य की श्रेणी में आता है। महाकवि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने मूकमाटी का सृजन हिन्दी भाषा में किया। यह काव्य है। इसे कालान्तर में और प्रकारान्तर से सभी ने महाकाव्य कहा। कुछेक विद्वानों ने इसे महाकाव्य कहने की निंदा भी की। परंतु महाकाव्यकार पर कोई प्रभाव नहीं हुआ क्योंकि उनका सृजन महाकाव्य बनाने के लिए नहीं हुआ था, उनका सृजन तो आनंद के लिए हुआ था। आप इसे क्या स्वीकार करते हो ? यह स्वयं के ऊपर निर्भर है। जिनका इस विषय से विरोध था कि यह महाकाव्य नहीं है, उनका कहना था इसमें महाकाव्य का लक्षण घटित नहीं होता है। सच में, महाकाव्य के सारे लक्षण तो इसमें घटित नहीं होते हैं, लेकिन महाकाव्य की परम्परा में ऐसा काव्य महाकाव्य की परिभाषाओं से बहुत ऊपर है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने इस महाकाव्य में मानव जीवन, अध्यात्म, आत्मिक विकास, आनंद, प्रकृति प्रेम, शांत रस, वीर रस, श्रृंगार रस, लंबी कविता आदि का अवलंबन इसमें गर्भित किया है।

इस काव्य के संबंध में स्वयं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज कहते हैं –

संकर-दोष से बचने के साथ-साथ वर्णलाभ को मानव जीवन का औदार्य व साफल्य माना है; जिसने शुद्ध-सात्विक भावों से संबंधित जीवन को धर्म कहा है, जिसका प्रयोजन सामाजिक, शैक्ष णिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में प्रविष्ट हुई कुरीतियों को निर्मूल करना और युग को शुभ-संस्कारों से संस्कारित कर भोग से योग की मोड़ देकर वीतराग श्रमण संस्कृति को जीवित रखना है .... और जिसका नामकरण हुआ है "मूकमाटी"।

मढ़ियाजी (जबलपुर) में
द्वितीय वाचना का काल था
सृजन का अथ हुआ और

नयनाभिराम-नयनागिरि में
पूर्ण पथ हुआ
समवशरण मंदिर बना
जब गजरथ हुआ। [1]

मूकमाटी का सृजन विश्व की अमूल्य धरोहर के रूप में है। इसका सृजन साहित्य परम्परा में अद्वितीय स्थान रखता है। आचार्यश्री ने माटी जैसी अकिंचन, पद-दलित और तुच्छ वस्तु को महाकव्य का विषय बनाने की कल्पना नितान्त अनोखी है।[2]

प्राकृतिक परिदृश्य, कुमुदिनी कमलिनी, चाँद, तारे, सुगन्ध , पवन, सरिता-तट, मंगल घट, गुरु, श्रद्धा शरीर, गधा शब्द की सार्थकता, स्त्री, नारी, सुता, दुहिता, कुमारी, अबला आदि शब्दों के अर्थान्तर, पाप, पुण्य, आत्मा, अग्नि, राख, पाप-प्रक्षालन, बोध, शोध, कुंकुम, शिल्पी, तत्व दर्शन, जैन दर्शन के विविध सिद्धांत, अहिंसा, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, लेश्या, यात्रा आदि शब्दों का सुंदरतम प्रयोग अर्थालंकार और शब्दालंकार की छटा के साथ इसमें गर्भित है। इस महाकाव्य में आचार्यश्री ने धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, नारी के कर्तव्य आदि विषयों पर काव्यात्मक शैली में लिखा है। इसमें पात्र बनाया है मूकमाटी, कंकड़ पत्थर आदि को एवं पद दलित चेतना, आरक्षण, पूंजीवाद, आतंकवाद, शोषण, वर्गभेद, समाजवाद, आर्थिक विषमता, यशोलिप्सा, भ्रष्टाचार, प्रभृति समकालीन अनेक राष्ट्रीकैय एवं सामाजिक समस्याओं एवं विद्रूपताओं के प्रति शंखनाद किया है।

संस्कृत भाषा में अनुवाद डॉ अभिराज राजेनद्र मिश्र द्वारा किया गया है। जिसका नामकरण ''मूकमृत्तिका'' है। इस मूकमृत्तिका में सूक्तियाँ इस विषय पर अपना लेखन कर रहा हूँ जिससने आचार्यश्री द्वारा कही गई सूक्तियाँ जन-जन के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सकें।

2. परिचय -

1. **मूकमाटी ग्रंथ का संक्षिप्त परिचय -** मूकमाटी महाकाव्य का प्रणयन दिगम्बर जैन आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा किया गया है। इस ग्रन्थ का प्रणयन 25 अप्रैल 1984 से 11 फरवरी 1987 के बीच हुआ। यह 488 पृष्ठीय महाकाव्य है। इस महाकाव्य का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली द्वारा किया गया और पहली बार 1988 में इसका लोकार्पण हुआ। इस कृति का प्रकाशन धर्मोदय विद्यापीठ सागर ने भी किया। मूकमाटी महाकाव्य पर अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, बंगाली,

कन्नड़, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह भारत देश की एक चर्चित कृतियों में से एक है।

इसकी विषय वस्तु पर के लिए अनेक विश्वविद्यालयों में अध्ययन 4 डी.लिट्, 24 PHD के शोध प्रबंध एवं 6 एम फिल, 2 एम एड तथा 5 एम. ए. के लघु शोध प्रबंध हो चुके हैं। इस पर लगभग 300 मनीषियों द्वारा अपनी मीमांसा लिखी है जो मूकमाटी मीमांसा से तीन खंडों में प्रकाशित हुई । गुजराती संस्करण का विमोचन माननीय नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा 14 अक्टूबर 2016 को अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल के तत्वाधान में आयोजित त्रिदिवसीय मूकमाटी अष्टम संगोष्ठी में किया गया।

अग्रेंजी भाषा अनुवाद The Silent Earth का विमोचन तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील द्वारा दिल्ली में 1 जुन 2017 में तथा उर्दू संस्करण का विमोचन रामटेक महाराष्ट्र में तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी द्वारा सन 22 सितम्बर 2017 में हुआ ।

यह महाकाव्य अब तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.), कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर, सौराष्ट विश्वविद्यालय राजकोट (गुजरात), अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल बरकत अल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, जबलपुर, जगदलपुर बस्तर, विश्वविद्यालय के एम ए / एमफिल पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा चुका है। म.प्र. पाठ्यक्रम पुस्तक कक्षा 9 वीं हिन्दी विशिष्ट में मूकमाटी का अंश **स्वाभिमान** नाम से म.प्र. के विद्यार्थीयों के ज्ञानार्जन में सहयोगी बना है ।

मूकमाटी के चार खण्ड हैं –

1. संकर नहीं, वर्णलाभ।
2. शब्द सो बोध नहीं, बोध सो शोध नहीं।
3. पुण्य का पालन, पाप प्रक्षालन।
4. अग्नि की परीक्षा चाँदी-सी राख।

2. **ग्रंथकार की पृष्ठभूमि और साहित्यिक योगदान –** 'मूक माटी' को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की विद्वत्ता, तपस्या और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतिबिंब माना जाता है। इस महाकाव्य में लघुता को नमन किया गया है और उसके लघुत्व में विराटता का दर्शन यह महाकाव्य कराता है। लघुता का महत्व बहुत गहरा है। लघुता, यानी सादगी, अक्सर विनम्रता और सहजता का प्रतीक होती है। यह एक ऐसी गुणवत्ता है जो व्यक्ति को अहंकार से दूर रखती है और समाज में सहयोग और समरसता को

बढ़ावा देती है। लघुता से भरपूर होने पर व्यक्ति अपने आप को बड़ी चीजों के साथ जोड़ सकता है और उनके महत्व को समझ सकता है।

इस काव्य में तुलसी, सूर, कबीर, रवीन्द्रनाथ और श्री अरविंद की काव्यकृतियों के समकक्ष एक सम्प्रदायातीत और कालातीत महाकाव्य के रूप में इसे स्थान दिया गया है। आचार्य विद्यासागर जी की इस रचना को उनके जीवन और दर्शन की गहराई को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। जैन दर्शन के सिद्धांतों को व्यापक एवं व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत करता यह महाकाव्य उनके शिष्यों और अनुयायियों के अतिरिक्त जैनेतर सुधी साधकों एवं साहित्यकारों में भी स्वीकार्य एवं लोकप्रिय है।

3. **ग्रंथ की साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता** – इस महाकाव्य में आचार्य विद्यासागरजी ने अपनी गहन आध्यात्मिक समझ और ज्ञान के ताने बाने को बड़ी ही रोचकता से काव्य के माध्यम से साझा किया है। यह न केवल जैन समुदाय बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य निधि है। कविता में विभिन्न पात्रों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है। एक अंश में, मच्छर एक सेठ से कहता है कि वह प्रलोभनों में न पड़े, स्वतंत्र जीवन जिए, छल-कपट की स्थिति को अलविदा कहे। इसी प्रकार कहा गया है कि क्षुद्रता को त्याग देना चाहिए तथा शील को ज्ञान रूपी आकाश में विलीन कर देना चाहिए। इस महाकाव्य के माध्यम से आचार्य विद्यासागर जी ने आत्मा की मुक्ति तथा शाश्वत सुख की खोज के विषय पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। उनका संदेश है कि आत्मा की मुक्ति केवल स्वयं के प्रयासों से ही संभव है तथा शाश्वत सुख केवल साधना से ही प्राप्त किया जा सकता है।

'मूक माटी' एक अमूल्य निधि है जो मानवता के सामने खड़ी आधुनिक चुनौतियों का सामना करने के लिए जैन दर्शन के मूल विचारों के साथ उनकी अनुपम देन है। इसमें जीवन की सार्थकता, आध्यात्मिक जागृति और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने वाले विचारों का समावेश है। यदि इस महाकाव्य को इसकी स्तरीय काव्यात्मक भाषा के साथ पर्याप्त महत्व दिया जाता है तो यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान के रूप में स्थापित होगा इसमें जरा भी संशय नहीं।

3. सूक्तियों का स्वरूप –

1. **सूक्ति शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ –** सुष्ठु उक्तम्। शोभना उक्तिविशिष्टम् इति सूक्तिः। सूक्ति का शाब्दिक अर्थ है सु+उक्ति, अर्थात **सुंदर या अच्छी बात**। यह ऐसा वाक्य या कथन है जो अपने गूढ़ अर्थ, सरलता और प्रभाव के कारण शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक, या सारगर्भित होता है।

2. **परिभाषा – 1. साहित्यिक दृष्टिकोण से:** सूक्ति एक ऐसा संक्षिप्त और प्रभावशाली वाक्य है जो किसी गहरे सत्य, नैतिक शिक्षा या जीवन के मूल सिद्धांत को प्रकट करता है।

   2. भाषा के दृष्टिकोण से: यह ऐसा वाक्य होता है जिसमें शब्दों का चयन और प्रस्तुति अत्यंत सुंदर, प्रभावशाली और ज्ञानवर्धक होती है।

3. **सूक्तियों का महत्व –** सूक्तियाँ प्राचीन भारतीय साहित्य में प्रचुरता में मिलती है। सूक्तियों को आधार बनाकर स्वतंत्र ग्रन्थों का भी सृजन किया गया है। सूक्ति का महत्त्व उसकी सारगर्भिता, शिक्षा प्रदान करना और जीवनोपयोगिता में निहित है। यह समाज और व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं।

   1. जीवन के मार्गदर्शन में सहायक –

- सूक्तियाँ नैतिक शिक्षा देती हैं और जीवन के कठिन समय में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।
- यह व्यक्ति को सत्य, धर्म, और नैतिकता का पालन करने की प्रेरणा देती हैं।
- उदाहरण: सत्यमेव जयते। सत्य का महत्व समझाती है।

   2. साहित्य और शिक्षा में योगदान –

- सूक्तियाँ साहित्य में संक्षिप्तता और प्रभावशीलता लाती हैं।
- ये विद्यार्थियों को गहन ज्ञान सरलता से समझाने का माध्यम होती हैं।
- यह भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाती हैं।

   3. संस्कृति और परंपरा का संरक्षण –

- सूक्तियाँ समाज की सांस्कृतिक धरोहर होती हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान का संवहन करती हैं।
- ये हमारी परंपराओं और मूल्यों का प्रतिबिंब होती हैं।

   4. चिंतन और प्रेरणा का स्रोत –

- सूक्तियाँ गहन विचार और आत्ममंथन को प्रेरित करती हैं।
- ये प्रेरणास्त्रोत बनकर व्यक्ति को उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करती हैं।
- उदाहरण: **अहिंसा परमो धर्मः** से अहिंसा का महत्व समझ आता है।

   5. सार्वभौमिक सत्य का प्रतीक –

- सूक्तियाँ किसी विशेष काल, स्थान, या व्यक्ति से बंधी नहीं होतीं, बल्कि ये सार्वभौमिक सत्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- इनका महत्त्व हर युग और परिस्थिति में बना रहता है।

सूक्तियाँ केवल वाक्य नहीं, बल्कि मानव जीवन को सही दिशा देने वाले अमूल्य संदेश हैं। ये समाज, संस्कृति और साहित्य में स्थायी मूल्य प्रदान करती हैं।

4. **मूकमाटी में प्रयुक्त सूक्तियों की शैली** – सूक्तियाँ अपने विशिष्ट रूप और प्रस्तुति के कारण साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मूकमाटी महाकाव्य में अनेक सूक्तियाँ समाविष्ट हैं। यहाँ हम सूक्तियों की शैली को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं –

- संक्षितप्ता और गूढता
- प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद
- लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता
- संगीतयता और छंदबद्धता
- सार्वभौमिकता और कालजयी
- सात्विकता एवं प्रभावशीलता

मूकमाटी में समाहित सूक्तियाँ –

1. यादृशी सङ्गतिरवाप्यते तादृशी भवति मतिः यादृशी मतिः, अग्रिमा गतिः।[3]

जैसी संगति मिलती है वैसी मति होती है। मति जैसी, अग्रिम गति।

2. अस्मादेव, जीवनस्य आस्थया सह सम्बन्धे जाते सति मार्गः स्वयं देशिकीभूय साधकं सम्बोधयन् सहचरीभूय साह्यं प्रयच्छति।[4]

इसलिए जीव का आस्था से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं, शास्ता होकर सम्बोधित करता साधक को साथी बन, साथ देता है।

3. असत्यस्य सम्यक् प्रत्यभिज्ञानमेव सत्यस्यावधानमस्ति।[5]

असत्य की सही पहचान ही सत्य का अवधान है।

4. पतनपातालस्यानुभतिरेव उत्थानोत्तुङ्गतायाः नीराजविधिर्भवति।[6]

पतन पाताल का महसूस ही उत्थान-ऊँचाई की आरती उतारना है।

5. चरणयोः प्रयोगाद् ऋते शिखरस्य स्पर्शनं न सम्भवति।[7]

चरणों का प्रयोग किए बिना शिखर का स्पर्शन सम्भव नहीं है।

6. स्वस्थः प्रौढः पुरुष एव कथं न स्यात् अम्मयनिचितपाषाणोपरि पादः संस्खलत्येव।[8]

स्वस्थ-प्रौढ़ पुरुष भी क्यों न हो काई लगे पाषाण पर पद फिसलता ही है।

7. निरन्तराभ्यासे सत्यपि स्खलनं सम्भवति।[9]

निरन्तर अभ्यास के बाद भी स्खलन संभव है।

8. आयासन्न भेतव्यम्, आलस्यं न कर्तव्यम्।[10]

आयास से डरना नहीं, आलस्य करना नहीं।

9. साधनास्खलिते जीवने अनर्थादृते किमन्यत् घटिष्यति?[11]

साधना-स्खलित जीवन में अनर्थ के सिवा और क्या घटेगा?

10. कस्यापि कार्यस्य सम्पादनसमये अनुकूलतायाः प्रतीक्षाकरणं नास्ति यथार्थपुरुषार्थः।[12]

किसी कार्य को समपन्न करते समय अनुकूलता की प्रतीक्षा करना सही पुरुषार्थ नहीं है।

11. प्रतिकूलतायाः प्रतीकारकरणमपि प्रकारान्तेण द्वेषस्याह्वानकरणं वर्तते, अनेन च मतौ समायाति कललित्वम्।[13]

प्रतिकूलता का प्रतिकार करना भी प्रकारान्तर से द्वेष की आहूत करना है और इससे मति में कलिलता आती है।

12. आस्थालुपुरुषस्य कृते न वर्तते अभिशापः, प्रत्युत वरदानमेव सिद्धं भवति (तेषां) ये यमिनो दमिनः प्रतिक्षणमुद्यमिनश्च सन्ति।[14]

आस्थावान् पुरुष को अभिशाप नहीं है, वरन् वरदान ही सिद्ध होते हैं, जो यमी, दमी हरदम उद्यमी है।

13. न केवलं मधुरदधितः अम्लदधितोऽपि समुचितमन्थनेन नवनीतस्य लाभोऽवश्यमेव जायते।[15]

मीठे दही से ही नहीं, खट्टे से भी समुचित मन्थन हो। नवनीत का लाभ अवश्य होता है।

14. संघर्षमयस्य जीवनस्य उपसंहारोऽयं निश्चप्रचमेव हर्षमयो भवति।[16]

संघर्षमय जीवन का उपसंहार वह नियमरूप से हर्षमय होता है।

15. नोपेक्षाकरणे सतीनां सताञ्च आज्ञापालन एव।[17]

टालने में नहीं सती-संतों की आज्ञा पालने में।

16. न सम्यक्तरमवधानं जातं सम्यक् समाधानं न जातम्।[18]

सही-सही समाधान नहीं हुआ सही समाधान नहीं हुआ।

17. अतिं विना इतिना साक्षात्कारो न सम्भवति किञ्च इतिं विना अथस्यापि दर्शनं न सम्भवति।[19]

अति के बिना इति से साक्षात्कार सम्भव नहीं और इति के बिना अथ का दर्शन असम्भव।

18. अस्मिन् क्षरणे अस्मिन् ज्वलने निमित्तकारणम् अहमेवाऽस्मि।[20]

इस छिलन में इस जलन में निमित्त कारण मैं ही हूँ।

19. विषयी सदा विषयकषायानेव विदधाति स्वविषयम्।[21]

विषयी सदा विषय कषायों को ही बनाता अपना विषय।

20. दयाया भाव एव जीवविज्ञानस्य भवति सम्यक् परिचयः।[22]

दया का होना ही जीव-विज्ञान का सम्यक् परिचय है।

21. एकान्तधारणायां अध्यात्म-विराधनैव भवति।[23]

एकान्त धारणा से अध्यात्म की विराधना होती है।

22. वासनाया विलासोऽस्ति मोहः, दयाया विकासोऽस्ति मोक्षः।[24]

वासना का विलास मोह है और दया का विकास मोक्ष है।

23. प्रत्येकं पदार्थः आत्मानं प्रति कारक एव भवति।[25]

प्रति पदार्थ अपने प्रति कारक ही होता है।

24. जीवनस्य निर्वाहः निर्माणो भवति।[26]

जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण होता है।

25. संकरदोषस्य निवारणं करणीयम् आसीत् मया ततश्च शर्कराकोषस्य वारणं कृतम्।[27]

संकर दोष का वारण करना था मुझे सो कंकर-कोष का वारण किया।

26. नीरस्य क्षीरीभवनमेव वर्णलाभोऽस्ति, वरदानमस्ति। किञ्च क्षीरस्य विदारणमेव वर्णसांकर्यमस्ति। अभिशापोऽस्ति अनेनैतदेव फलितम्।[28]

नीर का क्षीर बनना ही वर्ण-लाभ है, वरदान है। और क्षीर का फट जाना ही वर्ण-संकर है अभिशाप है इससे यही फलित हुआ।

27. लघुतयास्त्यजनमेव गुरुताया यजनमेव शुभस्यास्ति सर्जनम्।[29]

लघुता का त्यजन ही, गुरुता का यजन ही शुभ का सृजन है।

---

[1] मूकमाटी मानस तरंग प्रस्तावना
[2] मूकमाटी प्रस्तावना
[3] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 8
[4] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 9
[5] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 9
[6] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 10
[7] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 10

[8] मूकमाटी/मूकमृत्तिका/पृष्ठ 11/पंक्ति 13-15
[9] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 11/पंक्ति 17-18
[10] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 11/पंक्ति 25-26
[11] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 12/पंक्ति 17-18
[12] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 13/पंक्ति 1-3
[13] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 13/पंक्ति 10-14
[14] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 13
[15] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 13-14
[16] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 14
[17] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 14
[18] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 32
[19] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 33
[20] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 36
[21] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 37
[22] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 37
[23] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 37
[24] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 38
[25] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 39
[26] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 33
[27] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 46
[28] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 49
[29] मूकमाटी/मूकमत्तिका/पृष्ठ 51